

III. बाह्य अर्थव्यवस्था

2011-12 की ति3 में भुगतान संतुलन (बीओपी) अत्यंत दबाव में आ गया। निवल पूंजी अंतर्प्रवाह चालू खाता घाटे (सीएडी) से कम पड़ गये जिससे आरक्षित निधियों को बड़े पैमाने पर आहरित करना पड़ा। विस्तृत सीएडी, बढ़ता बाह्य ऋण, कमजोर होती निवल अंतरराष्ट्रीय निवेश स्थिति (एमआईआईपी) और बिगड़ते अतिसंवेदनशील संकेतकों ने बाह्य अर्थव्यवस्था और मांग प्रबंधन नीतियों को और अधिक विवेकपूर्ण बनाने की आवश्यकता को रेखांकित कर दिया। जहाँ ति4 में पूंजी अंतर्प्रवाहों में सुधार हुआ, वैश्विक अनिश्चितताओं, उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की आर्थिक वृद्धि में कमी और लगातार ऊँचे तेल मूल्यों ने बाह्य परिप्रेक्ष्य के लिये अधोमुखी जोखिम पैदा कर दिये हैं क्योंकि इन उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में अब भारत के निर्यात का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है।

बीओपी दबाव में आने से सतर्कता की आवश्यकता है

III.1 भुगतान संतुलन (बीओपी) 2011-12 की ति3 के दौरान दबाव में आ गया क्योंकि व्यापार संतुलन बिगड़ गया और पूंजी अंतर्प्रवाहों में कमी आई। व्यापार संतुलन तिमाही में रुपये में मूल्यहास के बावजूद बिगड़ गया क्योंकि भारत के कुछ आयातों का स्वरूप अनम्य है, साथ ही निर्यातों में कमी आई जो वैश्विक अनिश्चितता दर्शाती है। 2011-12 में पूरे वर्ष का चालू खाता घाटा काफी बड़ा होने की संभावना है। आगे यदि तेल और सोने के आयात

में काफी कमी नहीं आती तो चालू खाता घाटा फिर भी दबाव में बना रह सकता है। सोने की भारी मांग और कच्चे तेल के लगातार ऊँचे मूल्यों के साथ उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में धीमी पड़ती वृद्धि से भारत के व्यापार संतुलन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। अतः व्यापार और पूंजी लेखों से संबंधित एक सतर्क दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

III.2 मंद वैश्विक प्रवृत्तियों ने भी ति3 में भारत के पूंजी अंतर्प्रवाहों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला जो कुछ अन्य उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में देखी गई प्रवृत्ति के अनुरूप था। यद्यपि 2011-12 की ति4 में पूंजी अंतर्प्रवाहों में सुधार आया, इस प्रवृत्ति का जारी रहना वैश्विक और देशी आर्थिक सुधार की रफ्तार के साथ-साथ नीतिगत सुधारों के सूत्रपात पर निर्भर करेगा। पूंजी अंतर्प्रवाहों पर जोखिम, वैश्विक वृद्धि में महत्वपूर्ण गिरावट और अमरीकी वृद्धि में पर्याप्त उछाल, दोनों ही कारणों से बने हुए हैं।

कमजोर रुपये और धीमी वृद्धि के बावजूद व्यापार घाटा बढ़ रहा है

III.3 अप्रैल-फरवरी 2011-12 के दौरान भारत का व्यापार घाटा पिछले वर्ष की तदनुसूची अवधि की तुलना में काफी बढ़ गया जो मंद निर्यात वृद्धि और ऊँचे आयातों के कारण हुआ (सारणी III.1 और चार्ट III.1)। रुपये में मूल्यहास के बावजूद व्यापार घाटे में बढ़ोतरी प्राथमिक रूप से वैश्विक मांग में कमी आने, उच्चतर वैश्विक

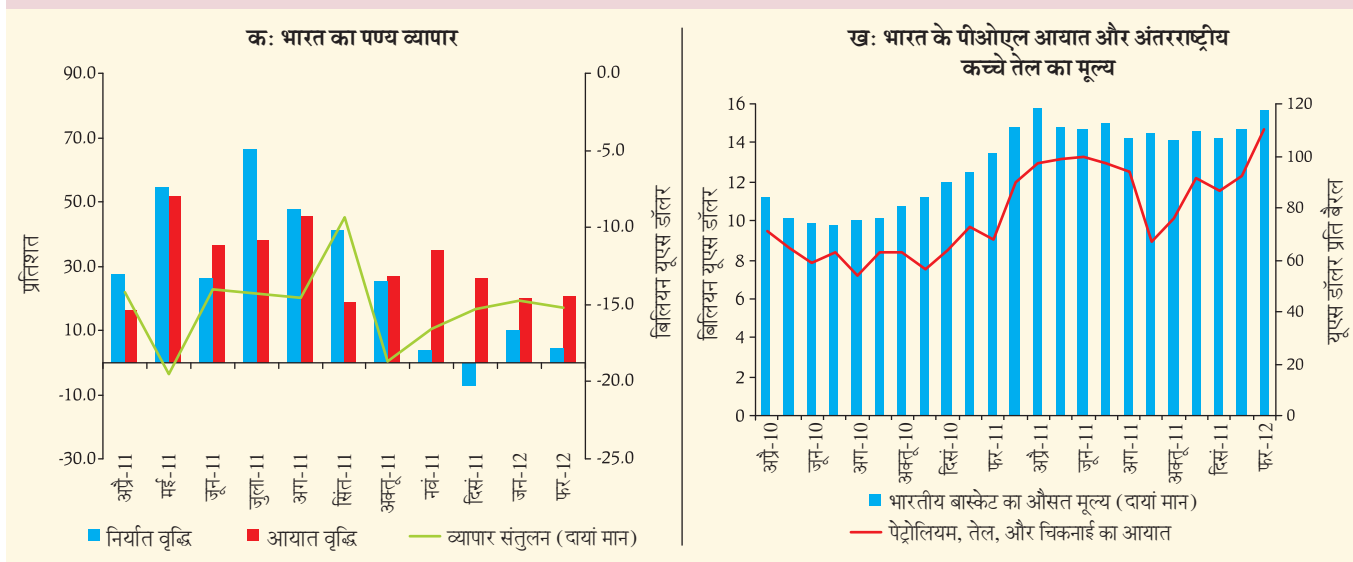
सारणी III.1: भारत का पण्य व्यापार

(बिलियन अम. डॉलर)

मद	2009-10 (सं)		2010-11 (अ)		अप्रैल - फरवरी			
	पूर्ण	वृद्धि (%)	पूर्ण	वृद्धि (%)	2010-11 (अ)		2011-12 (अ)	
					पूर्ण	वृद्धि (%)	पूर्ण	वृद्धि (%)
1	2	3	4	5	6	7	8	9
निर्यात	178.8	-3.5	251.1	40.5	220.3	39.0	267.4	21.4
जिसमें : तेल	28.2	2.3	41.4	46.9	36.3	48.4	53.0	46.0
तेल से भिन्न	150.6	-4.6	209.7	39.3	184.0	37.2	214.4	16.5
आयात	288.4	-5.0	369.8	28.2	335.5	29.7	434.2	29.4
जिसमें : तेल	87.1	-7.0	104.0	19.3	94.0	19.9	132.6	41.0
तेल से भिन्न	201.2	-4.2	265.8	32.1	241.5	33.9	301.6	24.9
व्यापार घाटा	-109.6		-118.7		-115.3		-166.8	
जिसमें : तेल	-58.9		-62.6		-57.7		-79.6	
तेल से भिन्न	-50.6		-56.1		-57.5		-87.2	

सं.: संशोधित अ: अनन्तिम स्रोत: डीजीसीआई और एस

चार्ट III.1: भारत का पण्य - व्यापार

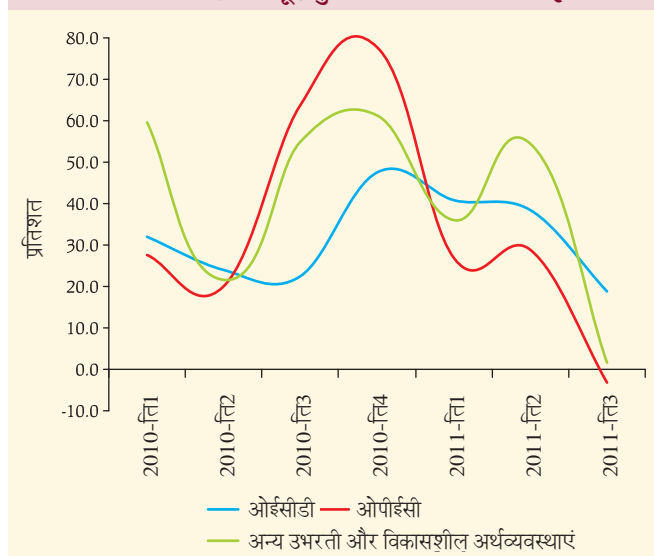


तेल मूल्यों में अपर्याप्त कमी और भारत के कुछ आयातों यथा सोना और चांदी के अपेक्षाकृत मूल्य के अनम्य स्वरूप, के कारण हुई है। घरेलू अर्थव्यवस्था में धीमे संकेतकों के बावजूद तेल से भिन्न और सोने से भिन्न आयातों में वृद्धि भी काफी बड़ी रही। वैश्विक प्रतिकूल पर्यावरण और चढ़े हुए वैश्विक कच्चे तेल के मूल्यों को देखते हुए, निकट भविष्य में भारत का व्यापार घाटा ऊंचा बना रह सकता है। किंतु सोने के आयात में मामूली कमी की संभावना हो सकती है जो 2012-13 के संघीय बजट में आयात शुल्क में बढ़ोतरी के कारण होगी।

सतत व्यापार विविधीकरण के बावजूद निर्यात वृद्धि कमजोर पड़ सकती है

III.4 हाल के वर्षों में भारत ने अपने निर्यात बाजारों के विविधीकरण के लिये व्यापक उपाय किए हैं। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में परंपरागत बाजारों के अंशदान से उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में नये बाजारों की ओर रुझान स्पष्ट दिखाई पड़ता है। किंतु, 2011-12 की ति-3 में सभी प्रमुख अर्थव्यवस्था समूहों को यूरो क्षेत्र संकट के कारण निर्यात धीमा पड़ गया (चार्ट III.2)। परन्तु, ओपेक और उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को निर्यात वृद्धि की गति में सुस्ती, ओईसीडी अर्थव्यवस्थाओं की अपेक्षा अधिक प्रखर थी। मंदी के बावजूद, उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को भारत के निर्यात का 42.7 प्रतिशत बड़ा हिस्सा बना रहा। यह उल्लेखनीय है कि उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के समूह में, अफ्रीकी और लातिन अमरीकी अर्थव्यवस्थाओं का हिस्सा 2011-12 की ति-3 में बढ़ गया। यदि भारत की प्रमुख भागीदार अर्थव्यवस्थाओं के साथ व्यापार वृद्धि धीमी बनी रही, जैसा कि आईएमएफ ने अनुमान लगाया है, भारत की निर्यात वृद्धि की गति और धीमी पड़ सकती है।

चार्ट III.2: देश-समूहानुसार भारत की निर्यात वृद्धि



लगातार बढ़े हुए सीएडी से बाह्य आघात सहनीयता पर प्रभाव पड़ सकता है

III.5 चालू खाता घाटा (सीएडी) 2011-12 की ति-3 में और अधिक बढ़ गया जो वैश्विक अनिश्चितताओं के साथ घरेलू कारकों के प्रभाव का जारी रहना दर्शाता है। 2011-12 की ति-3 में जीडीपी

सारणी III.2: भारत के भुगतान संतुलन की प्रमुख मदे

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

	2010-11	2010-11				2011-12		
		ति1	ति2	ति3	ति4	ति1 (आं.सं)	ति2 (प्रा)	ति3 (प्रा)
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1. माल निर्यात	250.6	55.2	52.0	66.0	77.4	74.4	76.5	71.2
2. माल आयात	381.1	87.2	89.0	97.4	107.4	115.6	119.8	118.8
3. व्यापार संतुलन (1-2)	-130.4	-32.0	-37.0	-31.4	-30.0	-41.3	-43.4	-47.7
4. सेवा निर्यात	131.7	26.5	31.1	38.8	35.3	33.0	32.4	36.7
5. सेवा आयात	83.0	16.7	19.2	26.3	20.7	17.9	18.4	21.7
6. निवल सेवाएं (4-5)	48.7	9.7	11.9	12.5	14.6	15.1	14.0	15.0
7. माल और सेवा संतुलन (3+6)	-81.8	-22.3	-25.1	-19.0	-15.5	-26.2	-29.4	-32.6
8. प्राथमिक आय (निवल) (कर्मचारियों को प्रतिपूर्ति और निवेश आय)	-17.3	-3.5	-4.8	-4.6	-4.5	-4.3	-4.6	-4.5
9. द्वितीयक आय (निवल) (निजी अंतरण)	53.1	13.1	13.0	13.4	13.6	14.8	15.6	17.5
10. निवल आय (8+9)	35.8	9.6	8.2	8.8	9.1	10.5	11.0	13.0
11. चालू खाता शेष (7+10)	-46.0	-12.6	-16.9	-10.1	-6.3	-15.7	-18.4	-19.6
12. पूंजी और वित्तीय लेखा शेष, निवल (आरक्षित निधियों में परिवर्तन को छोड़कर)	62.0	17.3	21.6	14.0	9.1	22.2	17.2	8.2
13. आरक्षित निधियों में परिवर्तन (-) वृद्धि/(+) कमी	-13.1	-3.7	-3.3	-4.0	-2.0	-5.4	-0.3	12.8
14. भूल-चूक (-) (11+12+13)	-3.0	-0.9	-1.4	0.1	-0.8	-1.0	-1.5	-1.4
जापान : (जीडीपी की प्रतिशतता के रूप में)								
15. व्यापार संतुलन	-7.7	-8.5	-9.8	-7.0	-6.3	-9.1	-9.8	-10.5
16. निवल सेवाएं	2.9	2.6	3.1	2.8	3.0	3.3	3.1	3.3
17. निवल आय	2.1	2.6	2.2	2.0	1.9	2.3	2.5	2.9
18. चालू खाता शेष	-2.7	-3.4	-4.5	-2.3	-1.3	-3.5	-4.1	-4.3
19. पूंजी और वित्तीय लेखा, निवल (आरक्षित निधियों में परिवर्तन को छोड़कर)	3.7	4.6	5.7	3.1	1.9	4.9	3.9	1.8

नोट : उप-घटकों का जोड़ पूर्णांकित किये जाने के कारण समग्र से मेल नहीं खा सकता।
प्रा: प्राथमिक आं.सं: आंशिक रूप से संशोधित

के 4.3 प्रतिशत पर सीएडी, 2010-11 की ति-3 में दर्ज किये गये 2.3 प्रतिशत से काफी ऊंचा रहा (सारणी III.2)। सीएडी के इन स्तरों तक बढ़ जाने से बाह्य क्षेत्र प्रबंधन के लिये चुनौती खड़ी होती है। पूंजी और वित्त लेखे (आरक्षित निधियों में परिवर्तन को छोड़कर) में कमी ने 2011-12 की ति-3 में सीएडी का वित्तपोषण आरक्षित निधियों से विदेशी मुद्रा आहरण द्वारा आवश्यक कर दिया जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था की कमजोर पड़ती बाह्य शक्ति प्रदर्शित होती है (सारणी III - 3)।

पूंजी अंतर्प्रवाहों ने नीतिगत उपायों का अनुसरण किया

III.6 नाजुक वैश्विक वित्तीय परिस्थितियों, यूरो क्षेत्र के संकट और बिगड़ते वैश्विक आर्थिक परिप्रेक्ष्य के बीच ति-3 में पूंजी अंतर्प्रवाह मंद रहे। वैश्विक उथल-पुथल के प्रभाव को पहचानते हुए, अंतर्प्रवाहों

को बढ़ाने हेतु ति-2 और ति-3 में अनेक उपाय किये गये : रुपये में अंकित एनआरआई जमाराशियों पर ब्याज दरों को विनियमन-मुक्त करना और 3 से 5 वर्षों की औसत परिपक्वता वाली बाह्य वाणिज्यिक उधार की सर्वसमाविष्ट लागत सीमा को बढ़ा देना। इसके अलावा, एफआईआई के लिये (यूएस \$ 25 बिलियन की समग्र सीमा के भीतर यूएस \$ 5 बिलियन तक) दीर्घावधि अवसंरचना इंफ्रास्ट्रक्चर बंध-पत्रों की न्यूनतम अवधि को घटाकर एक वर्ष कर दिया गया और एफएफआई के लिये सरकारी प्रतिभूतियों और कंपनी बंधपत्रों की सीमा को प्रत्येक में \$ पाँच बिलियन बढ़ा दिया गया। इन खंडों के अंतर्गत पूंजी प्रवाहों ने नीतिगत उपायों को सकारात्मक प्रतिसाद दिया। जनवरी और फरवरी में ईक्विटी और ऋण दोनों में, एफएफआई के अंतर्प्रवाहों में काफी वृद्धि हुई जबकि एफडीआई अंतर्प्रवाहों में व्यापक स्थिरता बनी रही। इसके अलावा, जहाँ ति-4 में बाह्य वाणिज्यिक उधार अंतर्प्रवाहों में सुधार हुआ, एनआरआई जमाराशियां स्थिर बनी रहीं

सारणी III.3: वित्तीय लेखे की विविध मदें

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

	अप्रैल- जून 2011 (पीआर)	अप्रैल- जून 2010 (पीआर)	जुलाई-सितं. 2011 (पीआर)	जुलाई-सितं. 2010 (पीआर)	अक्तू.- दिसं. 2011 (पी)	अक्तू.- दिसं. 2010 (पीआर)
1	2	3	4	5	6	7
1. प्रत्यक्ष निवेश (निवल)	7.8	3.5	4.0	3.6	4.5	1.2
1.ए भारत में प्रत्यक्ष निवेश	13.3	6.7	7.0	7.5	6.4	6.1
1.बी भारत में द्वारा प्रत्यक्ष निवेश	-5.6	-3.3	-3.0	-3.9	-1.9	-4.9
2. संविभाग निवेश	2.3	3.5	-1.4	18.7	1.8	6.1
2.ए भारत में संविभाग निवेश	2.5	3.5	-1.6	18.8	1.9	7.2
2.बी भारत द्वारा संविभाग निवेश	-0.2	0.0	0.2	-0.1	0.0	-1.1
3. अन्य निवेश	12.4	10.4	14.4	-0.7	1.8	6.6
3.ए अन्य ईक्विटी (एडीआर/ जीडीआर)	0.3	1.1	0.2	0.5	0.1	0.2
3.बी. मुद्रा और जमाराशियां	1.2	1.1	2.8	0.4	3.2	0.3
जमाराशि स्वीकारने वाले निगम, केन्द्रीय बैंक को छोड़कर (एनआर आई जमाराशियां)	1.2	1.1	2.8	1.0	3.3	0.2
सी. ऋण *	15.2	7.6	9.5	0.4	-5.9	9.7
3.सी. i भारत को दिये गये ऋण	15.2	7.7	8.8	0.7	-6.4	9.3
जमाराशि स्वीकारने वाले निगम, केन्द्रीय बैंक को छोड़कर	11.5	2.9	3.9	-3.6	-8.7	4.6
सामान्य सरकार (बाह्य सहायता)	0.4	2.5	0.3	0.6	1.4	1.2
अन्य क्षेत्र (ईसीबी)	3.3	2.3	4.6	3.7	0.9	3.5
3.सी.ii भारत द्वारा दिये गये ऋण	0.0	-0.1	0.6	-0.3	0.5	0.3
सामान्य सरकार (बाह्य सहायता)	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
अन्य क्षेत्र (ईसीबी)	0.0	0.0	0.6	-0.3	0.5	0.3
3.डी व्यापार ऋण और अग्रिम	3.1	4.3	2.9	2.6	-0.1	1.3
3.ई अन्य प्राय्य देय लेखे	-7.3	-3.7	-0.9	-4.6	4.5	-4.9
4. आरक्षित आस्तियां	-5.4	-3.7	-0.3	-3.3	12.8	-4.0
वित्तीय लेखा (1+2+3+4)	17.0	13.6	16.7	18.3	20.9	9.9

नोट: उप घटकों का जोड़ पूर्णांकित किए जाने के कारण समग्र से मेल नहीं खा सकता।

*बाह्य सहायता, ईसीबी, गैर-एनआरआई बैंकिंग पूंजी और लघु अवधि व्यापार ऋण शामिल है।

अ: अर्न्तम

आं.सं : आंशिक रूप से संशोधित

(सारणी III.4)। किंतु, आने वाली तिमाहियों में पूंजी प्रवाहों के रुख वैश्विक और घरेलू आर्थिक और वित्तीय परिस्थितियों पर प्रबलता से निर्भर करेंगे जिसमें घरेलू नीतिगत सुधारों की गति शामिल है। यह नोट किया जाना आवश्यक है कि यद्यपि ऋण अंतर्प्रवाह सीएडी के

वित्तपोषण के साधन बनते हैं, वे भारत की बाह्य आर्थिक स्थिति और परिणाम स्वरूप वित्तीय स्थिरता को प्रभावित करते हैं।

2011-12 की ति-3 में अस्थिर रहने के बाद ति-4 में रुपये में सुधार

सारणी III.4: 2011-12 में पूंजी प्रवाह

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

घटक	2011-12 (अप्रै-अग)	2011-12 (सितं-दिसं)	2011-12 (जन-फर)
	(मासिक औसत)		
1	2	3	4
भारत में एफडीआई	4.8	3	3.1
भारत द्वारा एफडीआई	1.0	0.8	0.8*
एफआईआई (निवल)	0.4	0.1	4.7*
एडीआर/जीडीआर	0.1	0.1	0.0
ईसीबी अंतर्प्रवाह	1.3	0.6	1.0
एन आर आई जमाराशियां (निवल)	0.5	1.2	1.2

* जनवरी-मार्च

III.7 अप्रैल 2011 के आखिरी सप्ताह से दिसंबर 2011 के मध्य तक यूएस डॉलर के मुकाबले रुपये में सांकेतिक रूप से सामान्यतः मूल्यहास हुआ ऐसा 2011-12 के पहले चार महीनों के दौरान उसके व्यापक रूप से दायरे के भीतर रहने के बाद हुआ। बाद में, रिजर्व बैंक द्वारा किये गये उपायों के फलस्वरूप विनिमय दर में स्थिरता आई और सरकार ने विदेशी मुद्रा बाजार में डॉलर की आपूर्ति सुधारने के साथ ही सट्टेबाजी पर रोक लगाने का लक्ष्य बना लिया। रिजर्व बैंक द्वारा किये गये हस्तक्षेप का परिमाण, जो कि फरवरी 2012 तक 20 बिलियन यूएस \$ से अधिक बैठता है, भी विदेशी मुद्रा बाजार में अस्थिरता को कम करने में सहायक हुआ। इन उपायों के संचयी

सारणी III.5 : सांकेतिक और वास्तविक प्रभावी विनिमय दरें - व्यापार आधारित (आधार, 2004-05 = 100)

[प्रतिशत, बढ़ोतरी (+)/हास (-)]

1	सूचकांक मार्च 30, 2012 (अ)	वर्ष-दर-वर्ष भिन्नता (औसत)				2011-12 (सितं. 2011 की तुलना में दिसं.2011)	2011-12 (दिसं. 2011 की तुलना में मार्च 2012)
		2008-09	2009-10	2010-11 (अ)	2011-12 (अ)		
2	3	4	5	6	7	8	
36-आरईईआर	94.2	-9.9	-3.2	8.0	-3.3	-8.1	4.7
36-एनईईआर	82.9	-11.0	-2.6	3.1	-6.5	-8.0	4.2
36-आर ई ई आर	86.1	-10.3	-4.6	4.8	-2.9	-8.5	4.2
30-एनईईआर	85.2	-8.4	-2.2	1.1	-5.5	-7.9	3.8
36-आरईईआर	105.5	-9.3	-0.3	13.0	-2.9	-7.9	4.2
6-एनईईआर	79.9	-13.6	-3.7	5.7	-7.5	-8.3	4.5
₹/यूएस \$ (औसत)	48.0	-12.4	-3.2	4.0	-5.0	-9.6	4.7
₹ / यूएस \$ (मार्च-अंत)	51.2	-21.5	12.9	1.1	-12.7	-8.2	4.1

एनईईआर : सांकेतिक प्रभावी विनिमय दर आरईईआर : वास्तविक प्रभावी विनिमय दर
अ: अनन्तम
नोट: सूचकांकों में वृद्धि रुपये के मूल्य में वृद्धि और इससे विपरीत स्थिती दर्शाती है।

प्रभाव को यूएस ने डॉलर के मुकाबले रुपये की कीमत को काफी हद तक पलट दिया जिससे वह दिसंबर 15, 2011 के ऐतिहासिक निचले स्तर ₹54.2 प्रति डॉलर से जनवरी 2012 के अंत तक ₹49.7 प्रति डॉलर हो गया। रुपया अभी हाल में पूंजी प्रवाहों में अस्थिरता के कारण कमजोर हो गया।

III.8 वास्तविक प्रभावी विनिमय दर (अर्थात् आरईईआर जो 6, 30 और 36 मुद्रा समूहों पर आधारित है) में ति4 में बढ़ोतरी देखी गई जिससे रुपये में सांकेतिक सुधार दिखता है और यह विदेशी मुद्रा

बाजार में डॉलर आपूर्ति सुधारने के लिये किये गये नीतिगत उपायों के प्रभाव से उत्पन्न हुई थी (सारणी III.5)।

ईसीबी और अल्पकालिक ऋण में वृद्धि होने से बाह्य ऋण का बढ़ना

III.9 भारत का बाह्य ऋण सितम्बर 2011 के अंत के 324 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर दिसम्बर 2011 के अंत में 335 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया जो ईसीबी और अल्पकालिक ऋण में व्यापक रूप से तीव्र वृद्धि दर्शाता है (सारणी III.6)। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय

सारणी III.6 : भारत का बाह्य ऋण

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

मद	मार्च- 2011 के अंत में (आं सं)	जून-2011 के अंत में (आं सं)	सितं- 2011 के अंत में (आं सं)	दिसं-2011 के अंत में (अ)	भिन्नता (सितं-2011 के अंत की तुलना में दिसं-2011 के अंत में)	
					राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7
1.बहुपक्षीय	48.5	49.4	49.1	49.9	0.8	1.6
2.द्विपक्षीय	25.7	26.2	27.1	27.1	0.0	0.2
3.अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष	6.3	6.4	6.2	6.1	-0.1	-1.7
4. व्यापार ऋण (1 वर्ष से अधिक)	18.6	18.7	19.5	19.9	0.4	1.9
5.बाह्य वाणिज्यिक उधार	88.8	93.4	96.8	100.1	3.3	3.3
6.अनिवासी भारतीय जमाशियां	51.7	52.9	52.3	52.5	0.2	0.4
7.रुपया ऋण	1.6	1.6	1.4	1.3	-0.1	-8.8
8.दीर्घावधि (1 से 7)	241.1	248.4	252.4	256.9	4.5	1.7
9.अल्पावधि	65.0	68.5	71.5	78.1	6.5	8.4
कुल (8+9)	306.1	316.9	323.9	334.9	11.0	3.3

अ: अनन्तम आं सं : आंशिक रूप से संशोधित

सारणी III.7 : बाह्य क्षेत्र संवेदनशीलता संकेतक

(प्रतिशत)

संकेतक	मार्च-अंत 2010	जून-अंत 2010	मार्च-अंत 2011	जून-अंत 2011	सितं-अंत 2011	दिसं-अंत 2011
1	2	3	4	5	6	7
1. कुल ऋण का जीडीपी से अनुपात	18.0	-	17.8	15.9	17.8	20.0
2. अल्पावधि ऋण का कुल ऋण से अनुपात (मूल परिपक्वता)	20.0	20.9	21.2	21.6	22.1	23.3
3. अल्पावधि का कुल ऋण से अनुपात (अवशिष्ट परिपक्वता)	41.2	42.5	42.2	43.3	43.4#	-
4. रियायती ऋण का कुल ऋण से अनुपात	16.8	15.9	15.5	15.1	14.8	14.3
5. आरक्षित निधियों का कुल ऋण से अनुपात	106.9	98.0	99.5	99.6	96.2	88.6
6. अल्पावधि ऋण का आरक्षित निधियों से अनुपात	18.8	21.0	21.3	21.7	23.0	26.3
7. आयातों का आरक्षित निधि कवर (महीनों में)	11.1	10.7	9.6	9.2	8.5	7.7
8. आयातों और ऋण सेवा भुगतानों का आरक्षित कवर (महीनों में)	10.5	10.1	9.1	8.8	8.0	7.3
9. ऋण चुकौती अनुपात (चालू प्राप्तियों की तुलना में ऋण सेवा भुगतान)	5.8	4.1	4.3	4.8	5.2	7.9
10. बाह्य ऋण (बिलियन अमरीकी डॉलर)	261.0	270.3	306.1	316.9	323.9	334.9

-: उपलब्ध नहीं

#: भारिबैंक अनुमान

बाजारों में हो रही उथल-पुथल और वैश्विक आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, रिजर्व बैंक ने ईसीबी की सर्वसमाविष्ट लागत सीमाओं को बढ़ा दिया और एनआरई तथा एनआरओ खातों पर ब्याज दरों को विनियमन-मुक्त कर दिया। पूरे वर्ष का बाह्य ऋण उच्चतर होने की संभावना है जो सीएडी के वित्तपोषण हेतु ऋण प्रवाहों पर निर्भरता दर्शाता है। बावजूद इसके, ऐसी आशा की जाती है कि बाह्य ऋण का स्तर काबू में रहेगा।

बाह्य संवेदनशीलता संकेतक खराब स्थिति प्रदर्शित कर रहे हैं

III.10 बाह्य क्षेत्र के प्रमुख संवेदनशीलता संकेतक 2011-12 की ति-3 में और अधिक बिगड़ गये (सारणी III.7)। तिमाही के दौरान, आयातों के आरक्षित कवर, कुल बाह्य ऋण में अल्पावधि का अनुपात, विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियों से कुल ऋण का अनुपात और ऋण सेवा अनुपात में स्थिति बिगड़ी। भारत की निवल अंतरराष्ट्रीय निवेश स्थिति (एनआईआईपी) भी कमजोर हुई क्योंकि निवल देयताएं सितंबर 2011 के अंत में 204 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर दिसंबर 2011 के अंत में 216 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गईं। परिणामस्वरूप, एन आई आई पी - जीडीपी अनुपात ति-3 में कुछ बिगड़ गया (सारणी III.8)।

III.11 भारत के बाह्य क्षेत्र के महत्वपूर्ण अधोमुखी जोखिमों के चलते, बाह्य क्षेत्र की नीतियों और समग्र मांग प्रबंधन में सतर्कता की आवश्यकता है ताकि सीएडी और अधिक न बढ़ पाये और बाह्य क्षेत्र के प्राचल विवेकशील स्तर पर बने रहें। इस विषय में, ऐसे कदम उठाये जाने की आवश्यकता है जो अंतरराष्ट्रीय पण्य मूल्यों के पूरी तरह से पासथू में सहायक हों, विशेषतः पेट्रोलियम पदार्थों के घरेलू मूल्य बढ़ाकर, मूल्यवान धातुओं की मांग को घटाकर और एफडीआई को आकर्षित करने हेतु सुधारों की गति बढ़ाकर।

सारणी III.8 : भारत की समग्र अंतरराष्ट्रीय निवेश स्थिति

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

अवधि	दिसं-10 (आं सं)	मार्च-11 (आं सं)	जून-11 (आं सं)	सितं-11 (आं सं)	दिसं-11 (अ)
1	2	3	4	5	6
एन आई आई पी	-210.0	-211.1	-224.6	-204.0	-215.7
आस्तियां	423.6	439.5	451.2	453.0	432.3
देयताएं	633.5	650.6	675.7	657.0	648.0
एनआईआईपी-जीडीपी अनुपात *	-13.1	-12.4	-12.4	-11.4	-12.0

अ : अनन्तिम आं सं : आंशिक रूप से संशोधित

* वार्षिकीकृत जीडीपी पर आधारित।